Meaning of Language & its Nature

भाषा का अर्थ और उसकी प्रकृति

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के भाष् धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है व्यक्त करना या संप्रेषित करना। यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक मात्र साधन भाषा है। कपूरस्वामी (1961) के अनुसार "सम्प्रेषण के एक परम्परागत प्रतीकों के माध्यम के रूप में भाषा को परिभाषित किया जा सकता है।"

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के शब्दों में, "भाषा कुछ स्वच्छ प्रतीकों के प्रयोगों के द्वारा किसी सामाजिक समूह के सदस्य अन्तःक्रिया तथा विचारों का आदान-प्रदान करते है।"

व्यक्ति के जीवन विकास के लिए भाषा अत्यंत आवश्यक है। भाषा समस्त संसार को एक दिशा प्रदान करती है यह भाषा ही है जो मनुष्य को पशुजगत से पृथक करती है। व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान भाषा के द्वारा कर सकता है। मानव संस्कृति भी भाषा पर आधारित है। किम्बल यंग के शब्दो में, "भाषा मानव संस्कृति की महत्वपूर्ण वस्तु है, उसके बिना संस्कृति का कोई अस्तित्व नहीं है तथा किसी कार्य का सम्पादन संभव नहीं है।

भाषा के गुण (विशेषताएँ)

1. भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है, पैतृक नहीं →
भाषा किसी भी व्यक्ति को जन्म से प्राप्त नहीं होता, बल्कि अपने माता-पिता, परिवार तथा समाज से उसे सीखना पड़ता है। सीखने की प्रवृत्ति के कारण ही भाषा का परिमार्जन भी होता है।

2. ~~भाषा परम्परागत है, व्यक्ति उसका अर्जन करता है, उसे उत्पन्न नहीं कर सकता है।~~

3. प्रत्येक भाषा के शब्दार्थ (Semantic) भिन्न-भिन्न होते है।

4. प्रत्येक भाषा की कुछ ध्वनियाँ और ध्वनि समूह होते है।

Scanned with CamScanner

5. भाषा का कोई अन्तिम स्वरूप नहीं होता।

बोलचाल की भाषा कभी भी यथावत नहीं रह सकती है। उसमें सदैव परिवर्तन होते रहता है। जिन भाषाओं का प्रयोग वर्तमान में नहीं किया जाता है उसे मृत भाषा मानी जाती है। भाषा में निरंतर परिवर्तन होते रहता है। विकास या परिवर्तन भाषा का अनिवार्य गुण है। अनुकरण के कारण इसमें परिवर्तन होना स्वभाविक माना जाता है।

6. भाषा सामाजिक सम्पत्ति है। इसे समाज में रहकर ही सीखा जा सकता है। समाज में जिस पारम्परिक भाषा का प्रचलन होता है व्यक्ति उसी को अर्जित करता है, उसी को अपनाता है। बालक भाषा सीखने में तर्क और ज्ञान का प्रयोग नहीं करता है। उसे बाल्यावस्था में जिस शब्द का ज्ञान करा दिया जाता है, वह उसे ज्यों-का-त्यों मान लेता है।

7. प्रत्येक भाषा की संरचना दूसरे से भिन्न होती है। अनेक स्तरों पर एक भाषा का स्वरूप दूसरे से भिन्न होता है, जैसे- ध्वनि, वाक्य, अर्थ, शब्द आदि रूपों में। प्रत्येक भाषा अपने में पूर्ण और स्वतंत्र है। सभी भाषा की अपनी एक व्याकरण व्यवस्था होती है, जिसे वाक्य विज्ञान कहा जाता है। वाक्यों के शब्द इसी व्याकरण नियम के अनुसार विशेष क्रम में व्यवस्थित होते हैं।

Nature of Language → भाषा की प्रकृति

भाषा की प्रकृति अत्यंत सूक्ष्म है, क्योंकि इसमें वर्तमान संकेतों का भाव तथा विगत अनुभूतियों का संबंध अदृश्य रूप में रहता है। भाषा एक जटिल क्रिया है। इसका सम्बन्ध एक ओर मस्तिष्क के स्नायु-तन्तुओं से श्रवणेन्द्रिय से है तो दूसरी ओर समाज विशेष की मान्यताओं और सांस्कृतिक संदर्भ से। मनोवैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार, "भाषा

समस्त मानसिक विचारों तथा मनोवेगों की अभिव्यक्ति का साधन है। विचारों के गठन तथा अभिव्यक्ति दोनों का संबंध मनोवैज्ञानिक सक्रियता से रहती है। वस्तुतः, यह स्थूल तथा सूक्ष्म क्रियाओं का समान्वित रूप है। स्थूल क्रिया का संबंध उत्तेजना अभिव्यक्ति प्रतिक्रिया से है तथा सूक्ष्म रूप का संबंध संकल्पना निर्माण कार्य से है।

प्रसिद्ध भाषाविद् जॉन करोल बी० के अनुसार, "भाषा वाक् ध्वनियों तथा ध्वनि समूहों का स्वेच्छिक, सुसंगठित रूप है जिसका प्रयोग पारस्परिक विचार-विनिमय में होता है। यह वस्तुओं, घटनाओं तथा मानव अनुभूति की प्रक्रियाओं का विस्तृत विश्लेषण तथा मूल्यांकन करती है।"

भाषा प्रकृति के कुछ बिन्दु :—

1) भाषा व विचारों का अटूट संबंध है

भाषा और विचार आपस में एक दूसरे से पृथक नहीं हो सकते है। विचार के अभाव में भाषा का कोई मूल्य नहीं है। पहले विचार की उत्पत्ति होती है फिर भाषा के सहयोग से उसे स्वरूप प्रदान किया जाता है।

2) भाषा का संबंध परम्परा से है : भाषा एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी द्वारा ग्रहण की जाती है। इसके मूल रूप में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

3. भाषा अभिव्यक्ति का एक सांकेतिक साधन है।

4. भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

5. भाषा अर्जित किया जाता है, पैतृक सम्पत्ति नहीं है।

6. यह ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है।

7. भाषा परिवर्तनशील होती है।

8. भाषा प्रतिकात्मक व्यवस्था का सूचक है।

Scanned with CamScanner